

2410

ASIA ARCHIVES

मास्था क नाम

विरवजरं विरभैरवः विरकपालवजरं मास्त
धिरभैरव कपाल उठाभैरव १ — ७

2410

ASIA ARCHIVES

ऐं ह्रीं श्रीं जा हू ह न म ते न मः
ॐ ह नू मान वि जिः कहिरंग का विः र्ज म
ता विः कौरो ए उ नाम स्यैः सर्वे व स्ये करोः
कालि करोः श्रव करोः ह नू मान किः द
याः दया निधि करो की वि सा धनाः ओ
ल टि गंगाः मू सान काः चो ल टि गंगा वि

कीः जा हा करोतः भस्म च धा वुं च धा
वुं व धि वि कि वा चाः एक मू खि ह नू
मान कि वा चाः स जित ह मा रा गो र ष ना
थ गुरु कि वा चाः वरे ह नू मान कि वा
चाः वि धी वुं ह नू मान कि द्या करो ८

नीधि कलपन वाधौः हि आनगर के
वो कसी वाधौः बलनगर के मसान
वाधौः वादा है विर्काः विरै है रुमना
विरमसान काः वो कसी वाधाः करई
नमन स्वाहाः विष्णु कर अव विनु

धाराः धारहिं धारह नूमान किजैः
जै करे त मालिकाः वन्दे ज करो का
लिकाः इन फरकिर किः रकि वाचाः
हनूमान विर्कि वाचाः माहादेव की
वाचाः वरा २ मसान का वाचाः गु

रुका वाचाः गेश्वरनाथ फकि की
वाचाः हनूमान फकि की वाचाः सि
धनाथ कि वाचाः हरिनाथ कि वा
चाः हनूमान दाहि करो कपालि कि
वाचाः ईन्द्रजित्नाथ कि वाचाः मे

घनाथ जि कि वाचाः ^xउस्कर देव कि
वाचाः वाचैवाधौ विह नूमान कि
वाचाः ॥ ॥ ॥ शुभम् ॥ ॥ ॥
उँ कालि ३ कपालि धरो फकि रकि र
कि वाचाः लय उचं चत २ मो जनकी
: धरो २

वाचाः वाचहिवाचहन्मानकरे
सवकरे किदाता वस्ये करेः हमा
राजि व पर उ सकाः मन धनः व
स्ये करेः सला मतः हज मर वस्ये
करेः नागः कालिका कि वाचा ॥ ॥
॥ साहेवः वस्ये ॥

ॐ ह नू मान क पाल वि भूत धारिणि
ता चि इंग म मान धा रिणि इठय
ठ स्वाहाः मंगल धारय ह नू मान
का जण करेः ऊ ऊ ण रे विलभ
प्र ह नू मान नू मान कि वाचाः जी

दानाथाविरथकरे मसानकाः
लंलंलंः रुमटहं ३ हं विलभद्र
हनूमानकि द्वाहिः द्वाहिफिरा
तुंहनूमानकाजगर्णफेराउं
फेराउं मेघनाथमसानकाः

धूंधूंधूं चिलि वूठाउं वूठातुं व
लभद्रहनूमानकि वाचाः लं
गरहेतौ मारा फटकु स्वाहाः
फटकु मेदानरुवारगा तुंरगा
तुंलगातुः चूमचूमचूम मर

स्वाहाः द्योतहेचक्र उयद्यर्धं
समारनहे मोहनयरेः कतिउ
पधं सधरेः धरे धरे फारन को
ईदमग स्वाहाः जगर्ध विरह
नूमान किवाचाः सारि अंग

विरकिवाचाः जगर्ध अंग कया
लकि विरकिवाचाः कालिस
र्यनागहनूमा किवाचाः हनूमा
नका विरकाचाः जो जन विरका
वाचाः सबद हनूमान कावाचा
पारवति हंसमालिका किवाचा

ॐ हनुमान विमैना धोज विर्मसा
नचक्रवाहे उष्यंठकाविःर्वी
रासिमशानवाहेः अरिऊम् कावि
मैयावाडोजिवकासशानमाजाई
लंछवेंस्वरहनुमान्ः वा उअंगमाः
श्रीसिका कलामः जाहाठलागैः व

हितऊमतेः वापरा कालकागतः
विरहनुमानऊमतेगयाफकिर
अल्वकावाचाः दूनहानमावैठेःष
राचुरविरवैठेः नरवलकिऊमतीः
कालिषपरउतारौः जाईमशानमा
खेलौः मसानकाविर्शिवजगदुःए

कमूरिह नूमान किवाचाः कालि
सर्प किवाचाः उनिचप किवाचाः
षेलना विर किवाचाः उग्रनाथ वि
र किवाचाः सवकोर वस्येरे व्रतिः
करोरुमिह नूमान सवमंत्रका
विरह नूमानूः इति क्रपनाजोग

काविरः हजारकारणा वंथ कासू
रलक्षका कवुरंग काविः रुलना
किवाचाः वराः वराः मशान किवा
चाः व्रजवानडुं वज्रगुरुः ओजा
वानूः रावावाडौः चक्रवैथकेरा
हिनीवाधौः पातुयदि उतिवाधौः

आर्य समाज

2410

ASHA ARCHIVES

हुं . हुनातकोमत्र ६



प्रेतः वा यो कन वस्य गन्याः सत्रु
रकन वस्ये गन्याः हजारका भूत
प्रेत वस्ये गन्याः ओ काम गरे सो का
मसि ध होगाः हजार के राज पे
गाः ओ सत्रु होगाः उस्कि ना उवा
त ज पे गाः यो नि ह नू मान का ज

पमं वः सर्व कार्ये सिद्धि होगा
ई ती ह नू मान मं व शुभा ॥

ॐ ह न मा व न जि वि ह न मान
जि के सा धौः क पुरंग का विरसा
धौः कि वां हा वा धौः ई न ध न विर

कास्याहाः वां हां उरिमारौः वडाव
डामसानवांधौः लंलंलंफट् स्वा
हाः जटाश्रंगफारौ धरति वांधौ
वौसिकाश्रंगवांधौ करविरम
सानके द्वाहिः जंजंजंफट् स्वाहा

जगेनामाति मुहनवसे करिजा
नातिमुहुनविरहनमानके द्वाहिः
सिमुहुं ~~विस्वनाथके~~ रक्ष
जटाईविरजंगमारदोजटाईरं
गविरका द्वाहिः पाउमंरक्षषड्

नां
मं

५४३२१
क
दि

दि
मं
दि
३
रे

धारिविरसाधनाः सकमुषिहन
मानका जायः लोमहरवर्न मगने
स्वाहाः जिवमगने स्वाहाः तिर
दाडोईन धनः वौसिका जिभासा
रौ कवुजनईनकाः अंगफैरौः

५१॥

जंहुँ अङ्कः फारौ मेगनाथविर
आईजंगफारौ अईन वौसिका
अंगमाविनातारौः मेगनाथके
अङ्कफारौः गंनुकातिरसाधेमदे
हु अंगफारौः वनिसविरसाधेः

जवलषकेसायरवांधे वतिस
बंधन वंद करे: गृह वंद वादौ
वाछ वंद वादौ: जिवा जंतु यंदि:
पनाम कि वस्य करे: आर्का का
तिरछा डे का: अर्का का वानछा

दे का: हर्क जित विर के वस्य पारो
हन मान जि की वाचा: नरसिंग
विर कि वाचा: जो दो फर कि र कि
वाचा: गुरु किस त्रि मे रि भ क्री
ई सोर कि वाचा: ॥ यसम न ले वौ

सि मारने: वाई उतुम स्पे व स्पे कर
ने: कतुस का दा रुवा: ये या का: स
मे दा गु रा स का: स मे दा विला उ नि
का स मे दा: सि म ल का स मे दा: चु वा
का स मे दा: सि उ नि का स मे दा: अ

रि न्द का स मे दा: का ला तिल मा ना १
ओ मा ना १ रि ठा मा ना १ ते ति मु छी
ने: गा इ के धि उ: र ग च न्दन को धु
लो: श्री ष न्द को धु लो: वं स लो च न
को धु लो: ते ति मु छि ने के सह: न या
धो ति: लू मार: प चि स जा त को फु

लःसिंदुरःसुधारिःजग्येकोसामा
त्रिःपाचय्यरामाभारिषानिःवेलु
काःवेलूकाःसाठसाठदिनसंस
होमगरनुःजोआफुरलाईविगा
रगरन्यावोगसिःकुनैःउसैकापै

तालालेठेकेकोमातोःल्याईतेसै
माताकोमसितुल्याउनुःसिउनि
कोमसितुल्याईःतेसैको७उलेषि
जग्येहोमगरौपैजलाकोमातो
हालिःलेषनुतेसकोनामलेषनु

होमगरनुः॥ असिग कुलकोर
सलेःनेत्रमाः अं जनगनुदिन
माःतारादेविंरुः गहतभिआई
मिसिःदहिसंगषानुसालफुरे
१॥ अथफुलोमंत्रनुमंत्रःॐ

फलफुलेस्वरि फलपरमेस्वरि
फुलहि वंधौ फुलहिवंधौ फुल
हिकरुं सिंगारयफुलः मणिफु
निकोदिनुः अठमहनिमंत्रकहो
हातवेठ ॥ ॐ अं कं यं तं तं यं यं सं स्वां हौ ॥ धा २१
गवथ आषे लूषा फुससतयः । तारे ॥ य